16

चित्रात्मक कथा

गोनू झाक महींस

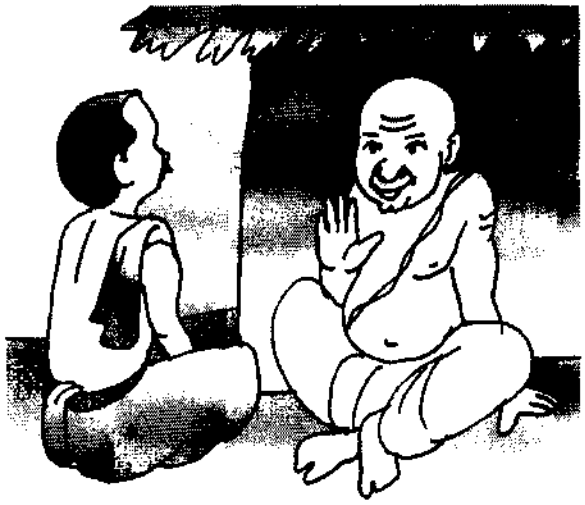

गोनू झा भोनू झा दू भाइ प्रेमपूर्वक रहैत छलाह ।

ग्रामीण लोकनिकेँ ई बात नीक नहि लगलनि। आ आपसमे झगड़ा होइन से उपाय सोचय लगलाह ।

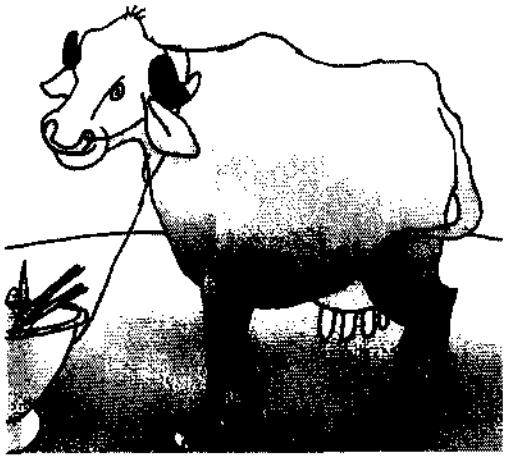

भाइ दू आ महींस एक बँटवारा होयत कोना ?

दुनू भाइमे मतान्तर बढ़य लागल

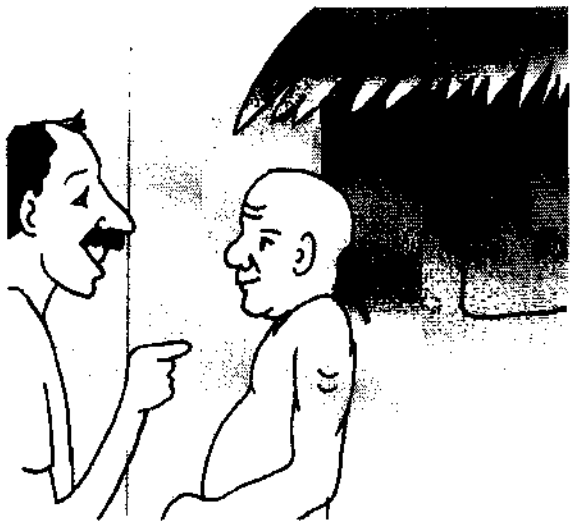

छोट-छोट बात लय कय झगड़ा होमय लगलनि।

पंचैतीक लेल गामक लोक सभ बैसलाह।

दुनू भाइ अपन-अपन बात कहलनि।

पंचैतीमे निर्णय भेल जे महींसक अगिला भाग गोनू झाक भेलनि आ पछिला भाग भोनू झाक।

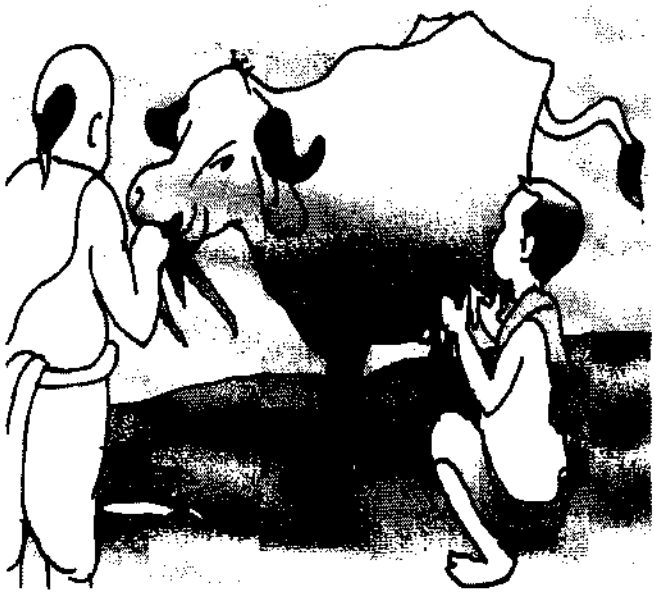

गोनू झा महींसकेँ खूब खोआबथि आ भोनू झा महीसकेँ खूब दूहथि।

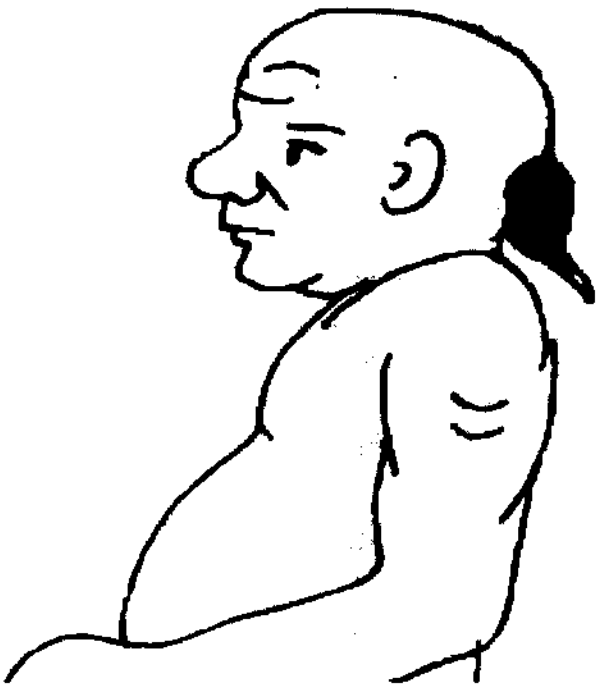

ई बात आर अधलाह लागय लगलनि, गोनू झाकेँ ।

गौआँ सभ गोनू झाक संग काना-फूसी करय लगलनि।

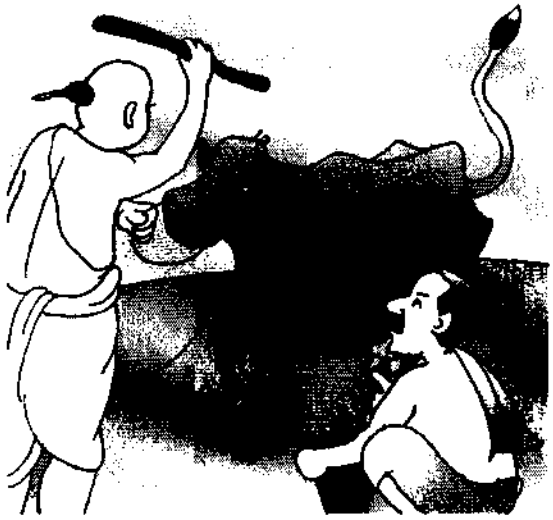

एक दिन भोनू झा महींसकेँ दूहय लगला आ तखने गोनू झा महींसकेँ डेंगाबय लगला।

महींस दूध नहि देलक । भोनू झा चिंतित भय गेलाह।

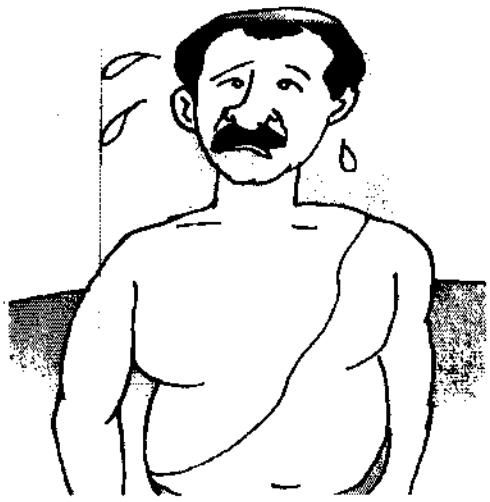

गोनू झा एहन काज़ लगातार दू-चारि दिन कयलनि ।

पुनः पंचैती भेल । आइ भोनू झा खिसिया कय पंचकेँ सभ बात कहलनि।

पंच लोकनि मुँह देखि मुँगबा परसने रहथि। तकर अनुभव भेलनि।

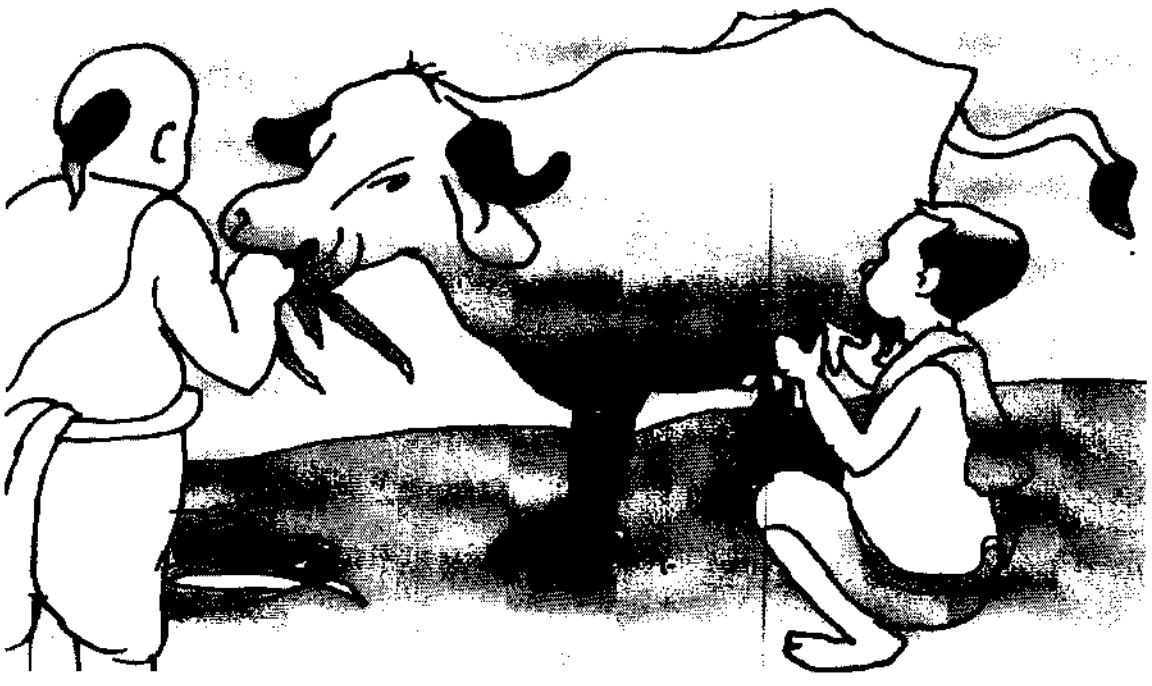

पुनः पंच लोकनि निर्णय लेलनि दुनू गोटे महींसकेँ खुऔता आ दूध बँटवारा बराबरि-बराबरि करताह ।

दुनू भाइ पंचक निर्णय मानि लेलनि आ पुनः प्रेम पूर्वक रहय लगलाह।